# इकाई 30 संदर्भ समूह का सिद्धांत - मर्टन

## इकाई की रूपरेखा


30.0 उद्देश्य

30.1 प्रस्तावना

30.2 संदर्भ समूह की अवधारणा

- 30.2.1 तुलनात्मक वंचन की अवधारणा
- 30.2.2 समूह और समूह सदस्यता की अवधारणा
- 30.2.3 ग़ैर-सदस्यता की अवधारणा
- 30.2.4 प्रत्याशी समाजीकरण
- 30.2.5 सकारात्मक और नकारात्मक संदर्भ समूह

30.3 संदर्भ समूह के निर्धारक तत्व

- 30.3.1 संदर्भ व्यक्ति
- 30.3.2 सदस्यता समूहों में से संदर्भ समूहों का चयन
- 30.3.3 ग़ैर-सदस्यता समूहों का चयन
- 30.3.4 मूल्यों तथा प्रतिमानों को परिभाषित करने के लिए संदर्भ समूहों की भिन्नता
- 30.3.5 निरंतर सक्रिय संपर्क वाले उपसमूहों अथवा प्रस्थिति-श्रेणियों में से संदर्भ समूहों का चयन

30.4 संदर्भ समूहों के संरचनात्मक तत्व

- 30.4.1 प्रेक्षणीयता और दृश्यमानता: प्रतिमानों, मूल्यों और भूमिका-निवार्हन की जानकारी के अनुकृत
- 30.4.2 अनुरूपता का अभाव: संदर्भ समूह आचरण का एक प्रकार
- 30.4.3 भूमिका पटल, प्रस्थिति पटल और प्रस्थिति क्रम

30.5 सारांश

30.6 शब्दावली

30.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

30.8 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 30.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपके लिए संभव होगा

- संदर्भ समूह की अवधारणा को समझना
- यह बताना कि लोग अपनी भूमिका-निर्वाहन तथा उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए अलग-अलग संदर्भ समूहों-सदस्यता समूहों तथा ग़ैर-सदस्यता समूहों का चयन क्यों करते हैं
- विभिन्न संदर्भ समूहों के प्रति लोगों के झुकाव के कारण तुलनात्मक वंचन की अनुभूति की निरंतर संभावना की विवेचना करना
- अपने जीवन पर रचनात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से दृष्टिपात करके यह पता लगाना कि किस प्रकार आपके द्वारा अपने संदर्भ व्यक्तियों एवं संदर्भ समूहों का चयन किया जाता है तथा उसी के अनुरूप अपनी जीवन-शैली, दृष्टिकोण तथा आचरण का निर्धारण होता है।

## 30.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने प्रकार्यात्मक विश्लेषण के क्षेत्र में मर्टन के योगदान के बारे में पढ़ा। इस इकाई में आपको संदर्भ समूह के आचरण के सिद्धांत का परिचय देने का प्रयास किया गया है। विशेषकर यह बताया जा रहा है कि अमरीका के समाजशास्त्री रॉबर्ट मर्टन ने किस प्रकार अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *सोशल थ्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर* (1949) में इस सिद्धांत को विस्तार से समझाया और सिद्ध किया है।

प्रारंभ में, भाग 30.2 में संदर्भ समूह की अवधारणा और उसके विभिन्न प्रकारों को समझाने की चेष्टा की गई है।

इसके पश्चात् भाग 30.3 में हमने निर्धारक तत्वों वाले संरचनात्मक, संस्थागत, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों की चर्चा की है, जिनसे प्रेरित होकर विभिन्न संदर्भ समूहों, सदस्यता समूहों तथा ग़ैर-सदस्यता समूहों का चयन किया जाता है।

और अंत में आपको संदर्भ समूह के आचरण के संरचनात्मक तत्वों अर्थात् समूह के सदस्यों के प्रतिमानों, मूल्यों तथा भूमिका-निर्वाहन की प्रेक्षणीयता तथा दृश्यमानता की संभावना, अननुकूलता के प्रभाव और भूमिका पटल एवं प्रस्थिति पटल की गतिकी के संबंध में जानकारी दी गई है।

## 30.2 संदर्भ समूह की अवधारणा

यह कहना आवश्यक नहीं कि सभी लोग समूहों में रहते हैं। आप सामाजिक प्राणी हैं और समाज में रहने के लिए आपको कुछ संबंधों के बीच रहना पड़ता है। फिर एक समूह है क्या? संबंधों का ताना-बाना ही तो समूह है।

उदाहरण के लिए, हर विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के एक समूह से जुड़ा होता है, जिनके साथ उसका सतत रूप से सक्रिय संपर्क रहता है। आपको पता है कि आपकी अपने समूह के सदस्यों से किस प्रकार के संबंधों की अपेक्षा होती हैं। आपको यह भी मालूम है कि दूसरे विद्यार्थियों की आपसे क्या आशाएं हैं। दूसरे शब्दों में आपका आचरण, व्यवहार, संबंध रखना आदि सदैव उस समूह से निर्देशित होता है, जिससे आप संबंधित हैं। जब तक आपका व्यवहार विद्यार्थियों के समूह की अनुकृत अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं ढलता तब तक आपकी विद्यार्थी के रूप में पहचान नहीं बनती।

इसी प्रकार, आप एक परिवार के सदस्य/सदस्या हैं। आपको मालूम है कि परिवार एक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है, जो हमेशा आपके व्यवहार और अपेक्षाओं को आकार देता है। यदि आप पूरी तरह ही जड़हीन नहीं हैं तो आपके लिए अपने माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, दोस्त आदि के साथ अनेक तरह के संबंध के बगैर संभवत: अपने अस्तित्व की कल्पना तक करना संभव न होगा।

अत: आपको यह समझना चाहिए कि किसी के लिए भी अलग-थलग रहकर सामान्य जीवन संभव नहीं होता। व्यक्ति कुछ संबंधों के बीच रहते हैं और जिस समूह से वे संबंधित हैं, उनकी अपेक्षाओं को उनकी सहमति प्राप्त होती है। सच्चाई यह है कि जिस समूह से वे जुड़े हैं, वह उनके संदर्भ समूह की भांति काम करता है।

इस प्रकार, यह समझा जा सकता है कि संदर्भ समूह क्या है। संदर्भ समूह वह समूह है, जिसके आधार पर हर व्यक्ति के लिए अपनी उपलब्धियों, व्यवहार भूमिका, आकांक्षाओं आदि का मूल्यांकन करना संभव होता है। संदर्भ समूह ही व्यक्ति को बताता है कि उसका काम ग़लत है अथवा सही। इससे यह तथ्य भी सामने आता है कि उसका सदस्यता समूह, अर्थात् जिससे वह जुड़ा है, वही उसका संदर्भ समूह है।

परन्तु समस्या यहीं समाप्त नहीं हो जाती। जीवन इससे भी अधिक जटिल है। जिनसे आप संबंधित

नहीं हैं, वे ग़ैर-सदस्यता समूह भी संदर्भ समूह की तरह काम कर सकते हैं। यह आश्चर्यजनक नहीं है। जीवन अत्यंत गतिशील है, इसलिए समय-समय पर आपको उन लोगों के बारे में भी जानकारी मिलती रहती है, जो आपके समूह से संबंधित नहीं है। और कभी-कभी आपको हैरान होकर अपने आप से प्रश्न करना पड़ता है कि दूसरे लोग आपसे अधिक शक्तिशाली एवं प्रतिष्ठित हैं। परिणाम यह होता है कि इस स्थिति में व्यक्ति के लिए वह अपनी उपलब्धियों और काम का मूल्यांकन ग़ैर-सदस्यता समूह के आधार पर करना संभव हो जाता है।

उदाहरण के लिए, एक युवा विद्यार्थी को लीजिए। उस पर उसकी पाठ्य-सामग्री के अध्ययन तथा परीक्षा आदि का बोझ होता है। सचमुच कठोर परिश्रम करने से उसके पास आराम करने तक की फ़ुर्सत नहीं है। तभी उसको एक अलग तरह के समूह (क्रिकेट खिलाड़ियों के समूह) का पता चलता है जो उसकी ही भांति युवा तथा शिक्षित हैं। वे लोग क्रिकेट खेलते हैं, विदेशों में जाते हैं, जीवन का आनंद लेते हैं, धन कमाते हैं और अखबारों में उनके बारे में खूब लिखा जाता है। क्रिकेट खिलाड़ियों के समूह की सफलता की कहानी से अति प्रभावित होने की स्थिति में उसको लगता है कि एक विद्यार्थी के रूप में वह वंचित और उपेक्षित है। इस प्रकार, क्रिकेट खिलाड़ी उसके संदर्भ समूह की तरह काम करना शुरू कर देते हैं। इस एहसास के फलस्वरूप पढ़ाई की बजाए क्रिकेट खेलने में उसका अधिक समय लगने लगता है और उसे आशा होती है कि एक न एक दिन क्रिकेट खिलाड़ी बनकर उनकी तरह जीवन बिताना उसके लिए संभव हो पाएगा।

सच्चाई यह है कि केवल सदस्यता समूह ही नहीं बल्कि ग़ैर-सदस्यता समूह भी संदर्भ समूह की तरह काम करते हैं। केवल अपने समूह के सदस्यों की दृष्टि से नहीं बल्कि दूसरे समूहों के लोगों की दृष्टि से भी स्वयं को परखा जाता है।

यह सब जान लेने के बाद आपको यह समझने में कठिनाई नहीं होगी कि मर्टन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर* (1949) में संदर्भ समूह के सिद्धांत को किस प्रकार विकसित किया है।

### 30.2.1 तुलनात्मक वंचन की अवधारणा

"तुलनात्मक वंचन" पर मर्टन की समझ संदर्भ समूह और संदर्भ समूह के आचरण के विवेचन से जुड़ी हुई है। इसके बिना संदर्भ समूह के बारे में समझ अधूरी रहेगी। मर्टन ने 1949 में प्रिंस्टन विश्वविद्यालय प्रेस से प्रकाशित *द अमेरिकन सोल्ज़र* के निष्कर्षों के विश्लेषण के दौरान तुलनात्मक वंचन का उल्लेख किया। इस कृति में यह विवेचन करने का प्रयास किया गया था कि अमरिकी सैनिक अपने बारे में क्या सोचते थे और अपने भूमिका-निर्वाहन और व्यावसायिक उपलब्धियों आदि का मूल्यांकन कैसे करते थे।

अब *द अमेरिकन सोल्ज़र* के सरल किंतु सार्थक निष्कर्षों का विवेचन नीचे प्रस्तुत है।

> सेना के अविवाहित सैनिकों से अपनी तुलना करते हुए विवाहित जवान यह महसूस करता था कि फौज में भर्ती होने से अविवाहित लोगों की अपेक्षा वह अधिक त्याग करता है और विवाहित असैनिकों से अपनी तुलना करते हुए वह यह सोच सकता था कि उससे उन बलिदानों की अपेक्षा की जा रही है, जिससे वे लोग पूरी तरह बचते रहे हैं।

मर्टन के अनुसार यही स्थिति तुलनात्मक वंचन कहलाती है। और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्योंकि प्रसन्न्ता तथा वंचन स्वयं में परिपूर्ण नहीं होते। अत: इसकी मात्रा इस पर निर्भर करती है कि उसे आंकने के लिए कौन सा पैमाना अपनाया गया है। यह संदर्भ के स्वरूप पर निर्भर है। विवाहित सैनिक की चिंता यह नहीं है कि उसे क्या मिलता है और उस जैसे दूसरे विवाहित सैनिकों को क्या प्राप्त होता है। इसकी बजाए उसकी चिंता यह है कि वह किस चीज़ से वंचित हो रहा है। वह जानता है कि उसके अविवाहित साथी तुलनात्मक दृष्टि से स्वतंत्र हैं। उन

पर पत्नी या बच्चों का दायित्व नहीं है। वे उन ज़िम्मेदारियों से मुक्त हैं जिनसे विवाहित लोग बच नहीं सकते। दूसरे शब्दों में विवाहित सैनिक उस प्रकार की स्वतंत्रता से वंचित हैं जिसका उनके अविवाहित साथी आनंद उठा रहे हैं। विवाहित सैनिक अन्य विवाहित असैनिक लोगों के साथ तुलना करने पर भी अपने आप को वंचित महसूस करता है। इसका कारण यह है कि विवाहित असैनिक व्यक्ति अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ रहकर अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकता है, किंतु विवाहित सैनिक इस सुख से वंचित है क्योंकि सैनिक होने के कारण सामान्य पारिवारिक जीवन का आनंद उठाने की उसकी स्थिति नहीं है। विवाहित सैनिक जिस प्रकार के संदर्भ समूह से अपनी तुलना करता है, उसी के अनुसार वह स्वयं को वंचित महसूस करता है। ऐसा ही एक और निष्कर्ष यह है, "विदेश में गया सैनिक देश में रह रहे सैनिकों से अपनी तुलना करने पर अपने पारिवारिक संबंधों तथा उन सुविधाओं को याद करके अधिक दुखी होता है जिनका वह अमरीका में आदी हो चुका था।" अमरीका के विख्यात विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थी का प्रसन्न होना स्वाभाविक है। उसे बेहतर शैक्षिक वातावरण, अधिक पुस्तकें, बेहतर शोध सामग्री तथा विचार विमर्श के लिए अधिक अवसर उपलब्ध हैं। परन्तु यदि वह शैक्षिक दृष्टि से संतुष्ट रहने की बजाए किस अन्य कसौटी (घर तथा मां-बाप, भाई-बहन आदि की कामना, जिनके साथ वह अपने सुख दुख बांट सके) के आधार पर सोचने लगे तो उसकी "प्रसन्नता" लुप्त होने लगेगी। यदि वह अपने परिवार के साथ रहने वाले अपने भारतीय साथियों के साथ अपनी तुलना करे तो संभवत: उसे वंचन महसूस होगा। इन सभी उदाहरणों को देखने से स्पष्ट है कि अपनी स्थिति की तुलना दूसरों की स्थिति से करते हुए पुरुष एवं महिलाओं में बेचैनी तथा परिवर्तन एवं आगे बढ़ने की इच्छा बनी रहती है (देखें चित्र 30.1)।

**चित्र 30.1: तुलनात्मक वंचन की अवधारणा**

### 30.2.2 समूह और समूह सदस्यता की अवधारणा

संदर्भ समूह का अध्ययन करने से पूर्व समझें कि समूह है क्या। मर्टन ने समूह तथा समूह-सदस्यता की तीन विशेषताएं बताई हैं।

i) पहली, एक निष्पक्ष कसौटी है: परस्पर संपर्क की आवृत्ति। अर्थात् समूह की समाजशास्त्रीय अवधारणा का संबंध उन अनेक लोगों से है, जो एक-दूसरे के साथ बार-बार सक्रिय संपर्क में आते हैं।

ii) दूसरी कसौटी है कि सक्रिय संपर्क में आने वाले लोग स्वयं को सदस्य के रूप में परिभाषित करते हैं। अर्थात् वे यह अनुभव करते हैं कि सक्रिय संपर्क के स्वरूप के बारे में उनकी निश्चित अपेक्षाएं हैं, जो उनके लिए तथा अन्य सदस्यों के लिए नैतिक दृष्टि से अनिवार्य हैं।

iii) तीसरी कसौटी यह है कि एक-दूसरे के सक्रिय संपर्क में रहने वाले लोगों को अन्य लोग "समूह से संबंधित" बताते हैं। "अन्य लोगों" में समूह के सदस्य तथा ग़ैर-सदस्य दोनों शामिल हैं।

इस संदर्भ में यह भी जानना ज़रूरी है कि समूह किस प्रकार सामूहिकताओं (collectives) एवं सामाजिक श्रेणियों (social categories) से भिन्न हैं। यह सही है कि सभी समूह सामूहिकताएं हैं किंतु सभी सामूहिकताएं अनिवार्यत: समूह नहीं होते। जिन सामूहिकताओं में सदस्यों के बीच सक्रिय संपर्क का अभाव होता है, वे समूह नहीं कहलाते। उदाहरण के लिए राष्ट्र एक सामूहिकता है, समूह नहीं क्योंकि राष्ट्र से संबंधित सभी लोग एक-दूसरे से सक्रिय संपर्क नहीं करते। सामूहिकता के रूप में राष्ट्र में समूह तथा उप-समूह होते हैं।

सामाजिक श्रेणियां सामाजिक प्रस्थितियों का समुच्चय होती हैं, जिनके धारकों में सक्रिय संपर्क नहीं होता। उदाहरण के लिए एक ही लिंग, आय, वैवाहिक स्थिति अथवा आय आदि के लोग सामाजिक श्रेणियां होते हैं, समूह नहीं।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सामूहिकताओं तथा सामाजिक श्रेणियों की अपेक्षा सदस्यता समूह लोगों के रोज़मर्रा के आचरण को अधिक स्पष्ट तथा निश्चित रूप से प्रभावित करते हैं। समूह के सदस्य अपनी पहचान के प्रति सचेत रहते हैं और उन्हें मालूम होता है कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इसके फलस्वरूप समूह के नियम उनके लिए नैतिक रूप से अनिवार्य होते हैं।

### 30.2.3 ग़ैर-सदस्यता की अवधारणा

मर्टन ने कहा है कि इस तथ्य में कोई नई बात नहीं है कि लोग अपने ही समूह के अनुकूल आचरण करते हैं। किंतु संदर्भ समूह का अध्ययन इस कारण दिलचस्प बन जाता है कि "लोग अपने आचरण तथा मूल्यांकनों के निर्धारणों के लिए अक्सर अपने समूह से भिन्न अन्य समूहों के अनुकूल अपने को ढालते हैं।"

इसी प्रसंग में मर्टन ग़ैर-सदस्यता की गतिकी (dynamics) पर ध्यान देने का आग्रह करता है। वास्तव में ग़ैर-सदस्य वे हैं जो सदस्यता की सक्रिय संपर्क तथा परिभाषा संबंधी कसौटियों पर खरे नहीं उतरते। परंतु जैसी कि मर्टन की मान्यता है, सभी ग़ैर-सदस्य एक ही प्रकार के नहीं होते। मोटे तौर पर ग़ैर-सदस्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) कुछ लोग समूह की सदस्यता की कामना कर सकते हैं।

(ii) अन्य लोग इस प्रकार के संबंध के प्रति उदासीन हो सकते हैं।

(iii) कुछ और ऐसे भी हो सकते हैं, जो समूह से असंबद्ध रहने को प्रेरित हों।

एक उदाहरण लें हैं। मान लीजिए एक व्यक्ति के पिता उद्योगपति हैं और उनका एक कारखाना है। स्वाभाविक है कि कारखाने में कामगारों के संदर्भ में वह व्यक्ति ग़ैर-सदस्य है। उस समूह से उसका कोई नाता नहीं है। किंतु इसके बावजूद तीन संभावनाएं हैं।

मान लीजिए वह अत्यंत संवेदनशील है, उसने मार्क्स का अध्ययन किया है और उसका दृढ़ विश्वास है कि केवल श्रमिक वर्ग ही अन्याय तथा शोषण से मुक्त नई व्यवस्था को जन्म दे सकता है। मतलब यह है कि ग़ैर-सदस्य होते हुए भी वह स्वयं को मज़दूरों के साथ जोड़ना चाहता है, उनके अनुभव को जानना चाहता है और उसी के अनुरूप वह अपनी जीवन-शैली को बदलता है। मर्टन के अनुसार ऐसा होने पर ग़ैर-सदस्यता समूह उसके लिए सकारात्मक संदर्भ बन जाता है।

एक संभावना और भी है। वह व्यक्ति अपनी मौजूदा स्थिति से संतुष्ट है और उसे किसी बात की परवाह नहीं है। इस प्रकार, उसके जीवन पर श्रमिकों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। भावार्थ यह है कि वह ग़ैर-सदस्य बना रहता है और श्रमिकों के समूह के साथ जुड़ने की उसकी कोई इच्छा नहीं है।

अब, तीसरी संभावना पर विचार कर लिया जाए। ग़ैर-सदस्य के रूप में उस व्यक्ति को मज़दूरों से घृणा है और उसकी सोच है कि वे न तो योग्य हैं और न ही शिक्षित तथा उनकी संस्कृति में कोई अच्छी बात नहीं है। इसके फलस्वरूप श्रमिकों से अपनी दूरी बनाए रखने तथा अपनी प्रस्थिति बनाए रखने के लिए उनके विरोध में उसका आचरण होने लगता है। इस प्रकार मर्टन का मानना है कि वे श्रमिक उसके लिए नकारात्मक संदर्भ समूह के रूप में काम करते हैं।

आइए अब इस रोचक चर्चा के बाद बोध प्रश्न 1 को पूरा करें।

**बोध प्रश्न 1**

i) तुलनात्मक वंचन क्या है? एक उदाहरण देकर समझाइए। अपना उत्तर आठ पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) ग़ैर-सदस्यता संदर्भ समूह का एक उदारहण दीजिए। चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

## 30.2.4 प्रत्याशी समाजीकरण

मर्टन ने ग़ैर-सदस्यता समूह के संदर्भ में प्रत्याशी समाजीकरण की चर्चा की है। वह बहुत साधारण है। यह एक तरह से उस समूह के लिए स्वयं को तैयार करना है, जिससे वह व्यक्ति जुड़ा हुआ तो नहीं हो, किंतु उसका सदस्य बनना चाहता हो। यह किसी ग़ैर-सदस्यता संदर्भ के मूल्यों एवं जीवन-शैली को अपनाने के समान है। मर्टन का कहना है कि प्रत्याशी सामाजीकरण से व्यक्ति विशेष को दो तरह से लाभ हो सकता है। एक तो, उसे समूह में ऊंचा उठने में मदद मिलती है। और, दूसरे, उस समूह का हिस्सा बन जाने के पश्चात् स्वयं को उसके स्वरूप में ढालना सरल हो जाता है।

एक उदाहरण से मर्टन का कथन अच्छी तरह से समझा जा सकता है। कल्पना कीजिए कि गांव के निम्न मध्यम वर्ग का एक बालक दून स्कूल के लड़कों को अपना संदर्भ समूह मानने लगता है और इसलिए प्रत्याशी समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत दून स्कूल के लड़कों जैसी तेज़ी तथा आन-बान की नक़ल करने लगता है। अब यदि वह बालक सचमुच दून स्कूल में भर्ती हो जाए

तो उसका प्रत्याशी समाजीकरण प्रकार्यात्मक हो जाएगा तथा नए वातावरण के अनुसार अपने को ढालने में उसे आसानी होगी।

मर्टन ने प्रत्याशी समाजीकरण के प्रकार्यात्मक परिणामों के साथ-साथ उसके दुष्प्रकार्यात्मक परिणामों की भी चर्चा की है। यदि प्रणाली में गतिशीलता की संभावना बिल्कुल नहीं है तो निम्न मध्यम वर्ग के बालक को दून स्कूल में कभी प्रवेश नहीं मिल पाएगा (यह समाजशास्त्री को ही देखना है कि स्थिति वास्तव में ऐसी है या नहीं)। उस हालत में प्रत्याशी समाजीकरण उस बालक के लिए दुष्प्रकार्यात्मक बन जाएगा। इसके दो कारण हैं। पहला यह कि वह उस समूह का सदस्य नहीं बन पाएगा, जिसकी वह कामना करता है। और दूसरा यह कि प्रत्याशी समाजीकरण अर्थात ग़ैर-सदस्यता समूह के मूल्यों की नक़ल के कारण वह अपने समूह के सदस्यों द्वारा नापसंद किया जाने लगेगा। मर्टन के अनुसार वह "सीमांत व्यक्ति" (marginal man) बन कर रह जाएगा। प्रत्याशी समाजीकरण अपेक्षाकृत उदार सामाजिक संरचना में ही प्रकार्यात्मक बन सकता है, क्योंकि वहां गतिशीलता (mobility) की संभावनाएं रहती हैं। किंतु गतिशीलता के अपेक्षाकृत अभाव वाली सामाजिक संरचना में यह दुष्प्रकार्यात्मक सिद्ध होगा।

मर्टन ने एक और दिलचस्प बात कही। गतिशीलता के अभाव वाले समाज में किसी व्यक्ति द्वारा गैर-सदस्यता समूह को संदर्भ समूह के रूप में चुने जाने की संभावनाएं बहुत कम होती हैं। यही कारण है कि गतिशीलता के अभाव वाली प्रणाली में जहां प्रत्येक स्तर के अधिकार, पूवपिक्षाएं तथा कर्त्तव्य आमतौर पर नैतिक रूप से सही माने जाते हैं, वहां निष्पक्ष स्थितियों के ठीक न होने के बावजूद भी व्यक्ति कम वंचित महसूस करेगा। किंतु गतिशील समाज में, जहां व्यक्ति सदैव ही अपनी स्थिति की तुलना अपेक्षाकृत अधिक संपन्न लोगों से करता रहता है, वह निरंतर अप्रसन्न एवं असंतुष्ट रहता है।

### 30.2.5 सकारात्मक और नकारात्मक संदर्भ समूह

मर्टन के कथनानुसार संदर्भ समूहों के दो प्रकार हैं। पहला है सकारात्मक संदर्भ समूह, जिसे व्यक्ति पसंद करता है और अपने आचरण का निर्धारण करने तथा उपलब्धियों एवं काम-काज का मूल्यांकन करने के लिए उसे गंभीरता से अपनाता है। दूसरा है नकारात्मक संदर्भ समूह, जिसे व्यक्ति नापसंद तथा अस्वीकार करता है और उसके अनुरूप आचरण करने की बजाय उसके विपरीत प्रतिमानों को अपनाता है। मर्टन के अनुसार, "सकारात्मक प्रकार में समूह के प्रतिमानों अथवा मानकों का अभिप्रेरणात्मक आत्मसात किया जाता है और वह स्वयं के मूल्यांकन का आधार होता है, जबकि नकारात्मक प्रकार में अस्वीकृति का भाव निहित है, जिसमें प्रतिमानों की अस्वीकृति ही नहीं, बल्कि विपरीत प्रतिमानों की रचना भी शामिल है।"

जब इस चर्चा के बीच में है तो क्यों न अभी ही सोचिए और करिए 1 को पूरा कर लें।

**सोचिए और करिए 1**

अपने मित्रों के बारे में यह जानने की चेष्टा कीजिए कि वे किस तरह के संदर्भ समूह (सकारात्मक या नकारात्मक) का चयन करते है। उस पर लगभग एक पृष्ठ का नोट लिखिए यदि संभव हो तो अपने उत्तर की अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के उत्तर से तुलना कीजिए।

इस विभाजन के उदाहरण ढूंढने कठिन नहीं है। कल्पना कीजिए कि देश विशेष के लोंगों का उपनिवेशवादी सत्ताधारियों के प्रति क्या रूख रहता है। कुछ ऐसे देशवासी होते हैं जो अपने उपनिवेशवादी शासकों की सफलता की कहानी पर मुग्ध हो जाते हैं और उनकी जीवन-शैली अपनाने, उनकी भाषा बोलने तथा उनकी खान-पान की आदतों को अपने जीवन में उतारने में गर्व महसूस करते हैं। दूसरे शब्दों में उनके लिए **उपनिवेशवादी वर्ग** सकारात्मक संदर्भ समूह है।

दूसरी ओर, ऐसे देशवासी भी होते हैं, जो उनकी शोषणकारी प्रवृत्ति, अहंकार, अत्याचार आदि के कारण उपनिवेशवादियों से नफ़रत करते हैं और उनके प्रतिमानों का अनुसरण करने की बजाय उपनिवेशवादियों से अपनी भिन्नता बनाए रखने के लिए विपरीत प्रतिमानों की रचना कर लेते हैं। उनके लिए उपनिवेशवादी नकारात्मक संदर्भ समूह है।

अगले चर्चा बिंदु पर जाने से पहले बोध प्रश्न 2 को अवश्य पूरा करें।

**बोध प्रश्न 2**

i) निम्नलिखित में कौन-सा कथन सत्य है? सही कथन पर ✓ चिन्ह लगाइये।

   क) प्रत्याशी समाजीकरण सभी परिस्थितियों में व्यक्ति के लिए प्रकार्यात्मक होता है।

   ख) प्रत्याशी समाजीकरण गतिशीलता के अभाव वाली समाज-व्यवस्था में प्रकार्यात्मक होता है।

   ग) प्रत्याशी समाजीकरण केवल अपेक्षाकृत गतिशील समाज व्यवस्था में, जिसमें आगे बढ़ने की संभावनाएं हों, प्रकार्यात्मक होता है।

ii) सकारात्मक तथा नकारात्मक संदर्भ समूह में क्या अंतर है? अपना उत्तर चार पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

## 30.3 संदर्भ समूह के निर्धारक तत्व

उन कारकों को जान लेना आवश्यक है जिनके आधार पर संदर्भ समूह का चयन किया जाता है। यही कारण है कि मर्टन ने लोगों द्वारा उनके संदर्भ व्यक्ति के चयन, विभिन्न सदस्यता समूहों में से किन्हीं समूहों के चयन, और अंततः गैर-सदस्यता समूहों के चयन को वरीयता दिए जाने की असंख्य संभावनाओं का उल्लेख किया है। मर्टन ने उन निर्धारक तत्वों की चर्चा की है, जिनसे प्रेरित होकर एक ही व्यक्ति के लिए आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक जीवन जैसे अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग संदर्भ समूहों का चयन करना संभव हो जाता है। इन सभी तत्वों के बारे में जानकारी मिल जाने से संदर्भ समूह के आचरण की गतिकी को समझने में निश्चय ही काफ़ी मदद मिलेगी।

### 30.3.1 संदर्भ व्यक्ति

यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि लोग संदर्भ समूहों का ही नहीं, संदर्भ व्यक्तियों का भी चयन करते हैं क्योंकि कुछ व्यक्ति अपने चमत्कारिक प्रभाव, प्रस्थिति, चमक-दमक आदि से लोगों को अपनी ओर खींच लेते हैं। उदाहरण के लिए, समूह के रूप में सुनील गावस्कर। इस प्रकार, यद्यपि क्रिकेट खिलाड़ी आपके लिए संदर्भ समूह नहीं हैं, जबकि सुनील गवास्कर संदर्भ व्यक्ति बन सकता है।

संदर्भ व्यक्ति को प्रायः भूमिका-आदर्श(role-model) की तरह माना जाता है। किंतु मर्टन ने इनमें अंतर बताया है। भूमिका आदर्श की अवधारणा का क्षेत्र सीमित होता है क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति की एक या दो चुनी हुई भूमिकाओं के मामले में उसे आदर्श माना जाता है। किंतु जिस व्यक्ति ने संदर्भ व्यक्ति के साथ स्वयं को संबद्ध किया है उसे "अनेक भूमिकाओं में उस व्यक्ति के आचरण तथा मूल्यों को आत्मसात् करना अच्छा लगेगा।"

दूसरे शब्दों में यदि आपने सुनील गावस्कर को अपना संदर्भ व्यक्ति स्वीकार किया है तो आपने सुनील गावस्कर की अनेक भूमिकाएं - उसका हंसना-बोलना, वेशभूषा, महिलाओं के साथ व्यवहार, मॉडल के रूप में काम करना, स्वयं में एकाकार करनी चाही होगी। मर्टन का कहना है कि जीवनीकार, प्रशंसकों की पत्रिकाओं के संपादक और प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन की झूठी-सच्ची खबरें छापने वाले पत्रकार लोगों को अपना संदर्भ व्यक्ति चुनने को प्रोत्साहित करते हैं।

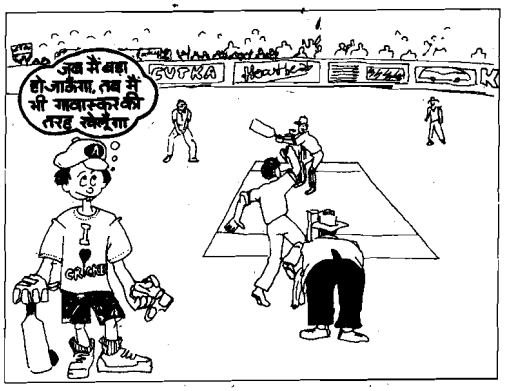


**चित्र 30.2: भूमिका आदर्श की अवधारणा**

आप किसी पत्रिका को उठाकर देखिए। आपको यह पता चलेगा कि उसमें किसी फिल्मी अभिनेता अथवा अभिनेत्री क्रिकेट खिलाड़ी, संगीतकार आदि की कला के बारे में ही नहीं, उनके "प्रेम संबंधों" और "निजी जीवन" पर भी लिखा जाता है। जब किसी विभूति को संदर्भ व्यक्ति मान लिया जाता है तो उसके हर पहलू - केशसज्जा से लेकर खान-पान की आदतों तक - का अनुकरण किया जाने लगता है।

## 30.3.2 सदस्यता समूहों में से संदर्भ समूहों का चयन

हर व्यक्ति अनेक समूहों से जुड़ा है। अपने परिवार से लेकर पड़ोस के क्लब या फिर जाति समूह राजनीतिक दल और धार्मिक संगठन से उसका संबंध रहता है। प्रश्न यह है कि क्या वह अपने आचरण का निर्धारण करते हुए या अपनी उपलब्धियों तथा भूमिका-निर्वाहन का मूल्यांकन करते हुए इन सभी समूहों को गंभीरता से लेता है? उसे मालूम होता है कि सभी सदस्यता समूह समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं होते। उनमें से कुछ का ही संदर्भ समूह के रूप में चयन किया जाता है।

व्यक्ति यह चयन कैसे करे? इस प्रश्न का उत्तर तब तक नहीं दिया जा सकता, जब तक उसे यह न मालुम हो कि सदस्यता समूह कई प्रकार के होते हैं। मर्टन के अनुसार, समूहों का "उपयुक्त वर्गीकरण" आवश्यक है। इस संदर्भ में मर्टन ने 26 समूह विशेषताओं की अस्थायी सूची तैयार की।

उदाहरण के लिए, मर्टन की मान्यता है कि विभिन्न समूहों में उस अंतर की मात्रा में पर्याप्त भिन्नता है, जिनके आधार पर सदस्यता की परिभाषा की जा सकती है। कुछ समूह एकदम अनौपचारिक होते हैं जिनकी कोई सीमा तय करना कठिन होता है, जबकि कुछ समूह एकदम स्पष्ट होते हैं और उनके सदस्य बनने की औपचारिक प्रक्रियाएं होती हैं। इसके अलावा, सदस्य की अपने समूह के प्रति आत्मीयता की मात्रा के आधार पर ही समूहों में अंतर किया जा सकता है। और भी अनेक विशेषताएं हैं जिनके आधार पर समूहों में अंतर किया जा सकता है। ये हैं: समूह की संभावित अवधि, उसका गतिशील होना अथवा उसमें गतिशीलता का अभाव, सामाजिक विभेद की मात्रा और समूह के प्रतिमानों के प्रति संभावित अनुरूपता की मात्रा। गैर-सदस्यता समूह के स्वरूप को समझ लेने पर व्यक्ति स्वयं फैसला करे कि इनमें से कुछ का संदर्भ समूह के रूप में क्यों चयन किया जाये। आपको इस संबंध में कुछ उदाहरण दिए गए हैं। अपने परिवार के सदस्यों के प्रति आपकी आत्मीयता किसी फ़िल्मी क्लब के सदस्यों की तुलना में कहीं अधिक होती

है। अत: इस बात की पूरी संभावना है कि अपने जीवन के प्रमुख निर्णय करने में फ़िल्म क्लब नहीं, अपितु आपका परिवार आपके लिए संदर्भ समूह के रूप में काम करेगा।

इसी प्रकार, जिस समूह की सदस्यता अधिक समय तक चलने की संभावना नहीं होती (उदाहरण के लिए स्नातक उपाधि के विद्यार्थियों की एक कक्षा केवल तीन वर्ष तक चलेगी) उसे संदर्भ समूह के रूप में अपनाने की संभावनाएं कम होती हैं। किन्तु जो समूह लंबी अवधि तक चलने वाले होते हैं, जैसे कि नातेदारी या जाति समूह, वे अवश्य ही संदर्भ समूह बनते हैं। यही कारण है कि अनेक लोगों के जीवन को दिशा देने में कॉलेज के दिनों के उनके मित्र नहीं (कॉलेज जीवन अस्थायी है) बल्कि नातेदारी या जाति समूह निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

### 30.3.3 ग़ैर-सदस्यता समूहों का चयन

यह समझना आवश्यक है कि लोग क्यों और किन परिस्थितियों में ग़ैर-सदस्यता समूहों का अपने संदर्भ समूह के रूप में चयन करते है। मर्टन के अनुसार, इसके लिए मुख्यतया तीन कारक उत्तरदायी हैं। पहला यह है कि संदर्भ समूह का चयन इस बात पर निर्भर करता है कि समूह की "समाज की एक संस्था की दृष्टि से प्रतिष्ठा प्रदान करने की क्षमता" कितनी है। यह बात एकदम सीधी है। समाज में सभी समूहों की शक्ति और प्रतिष्ठा एक जैसी नहीं होती। उदाहरण के लिए ऐसा देखने में आता है कि हमारे यहां विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक अपने स्तर की तुलना अक्सर भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) अधिकारियों से करते हैं। इस प्रकार प्राध्यापकों के लिए आई.ए.एस. अधिकारी संदर्भ समूह हैं। इसका कारण एकदम स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय समाज के संस्थागत स्वरूप में आई.ए.एस अधिकारियों को प्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठा तथा अधिकार प्राप्त हैं। जिस ग़ैर-सदस्यता समूह को अधिक प्रतिष्ठा एवं अधिकार प्राप्त नहीं हैं, उसके संदर्भ समूह बनने की संभावना बहुत कम है।

दूसरा कारक यह है कि इस बात की जांच की जाए कि आमतौर पर किस प्रकार के लोग ग़ैर-सदस्यता समूहों को अपने संदर्भ समूहों के रूप में अपनाते हैं। मर्टन का कहना है कि सामान्यतया किसी समूह में "अलग-थलग पड़ गए लोग" ही ग़ैर-सदस्यता समूह के मूल्यों को "संदर्भ के प्रतिमानों" के रूप में अपनाते हैं। कारण स्पष्ट है कि अपनी विद्रोही प्रवृत्ति अथवा आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा के फलस्वरूप वे अपने समूह से असंतुष्ट रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप उनके लिए ग़ैर-सदस्यता समूहों के मूल्यों को अपना लेने की संभावनाएं अधिक रहती हैं। इसके उदाहरण के रूप में मर्टन ने "अभिजन वर्ग के हताश व्यक्ति" का उल्लेख किया है जो उस वर्ग की राजनीतिक विचारधारा को अपना लेता है, जो उसके अपने वर्ग से कम शक्तिशाली होता है।

वह सामाजिक प्रणाली जिसमें सामाजिक गतिशीता की अपेक्षाकृत दर ज़्यादा है उसमें ग़ैर-सदस्यता समूह के सदस्यों को अपने समूह का सदस्य बनाने की संभावनाएं ज़्यादा हो जाती हैं। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि अधिक गतिशील प्रणालियों में लोग अपने से अलग समूहों से अवगत हो पाते हैं और उनमें अपनी स्थिति में निरंतर बदलाव लाने की इच्छा पैदा होती रहती है।

इस रोचक विषय पर चर्चा करते हुए क्यों न सोचिए और करिए 2 को भी पूरा कर लें।

**सोचिए और करिए 2**

उन संभावित संदर्भ व्यक्तियों की सूची बनाइए, जिनका चयन आप अपने जीवन को नया अर्थ देने के लिए करना चाहेंगे/चाहेंगी। ये फ़िल्म कलाकार, राजनेता, क्रिकेट खिलाड़ी आदि हो सकते हैं। इस विषय पर एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए और संभव हो तो अपनी टिप्पणी की अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणी से तुलना कीजिए।

### 30.3.4 मूल्यों तथा प्रतिमानों को परिभाषित करने के लिए संदर्भ समूहों की भिन्नता

व्यक्ति किसी संदर्भ का चयन क्यों करे? इसके अनेक कारण हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, गांधीवादियों को अपना संदर्भ समूह मानने का कारण हो सकता है कि गांधीवादी लोग समर्पित होते हैं और उनके राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांतों से उसकी सहमति है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि गांधीवादियों के सभी कामों से वह सहमत हो। जीवन के प्रति उनके परंपरावादी दृष्टिकोण, ब्रह्मचर्य, निरामिष भोजन इत्यादि से उसकी असहमति हो सकती है। जीवन-शैली, खान-पान या यौन संबंधी नैतिक मूल्यों के मामले में उदारवादियों को उसके लिए अपना संदर्भ समूह मानना संभव है। मर्टन के अनुसार, यह नहीं समझा जाना चाहिए कि लोगों के लिए वही समूह आचरण के प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से संदर्भ समूह की भूमिका निभाते हैं।

इसलिए संदर्भ समूह का चयन अंततः उन मूल्यों तथा प्रतिमानों के स्वरूप एवं स्तर पर निर्भर करता है जिन्हें व्यक्ति ने महत्व दिया है। जो समूह किसी के लिए राजनीतिक विचारधारा के मामले में संदर्भ समूह हैं, हो सकता है धार्मिक सिद्धांतों के मामले में वे एकदम असंगत हों। इसलिए ऐसा भी हो सकता है कि साम्यवादी दलों को वोट देने वाले लोग रामकृष्ण मिशन जैसे धार्मिक संगठन के प्रति भी झुकाव रखें।

### 30.3.5 निरंतर सक्रिय संपर्क वाले उपसमूहों अथवा प्रस्थिति-श्रेणियों में से संदर्भ समूहों का चयन

एक छात्रा की दुविधा की कल्पना कीजिए जिसकी दो अस्मिता हैं। पहली यह कि वह छात्रों की प्रस्थिति श्रेणी की सदस्या है और दूसरी यह कि वह अपने उपसमूह जिसमें उसके मां, बाप, भाई, बहन आदि सभी सदस्य हैं, वह उसकी भी सदस्या है। अब क्या यह मानना हमेशा तर्कपूर्ण होगा कि वह छात्रा अपने उपसमूह के विचारों के विरुद्ध छात्र संघ के प्रभाव में आकर अपनी कक्षा का बहिष्कार करे। परंतु अपने उपसमूह के सदस्यों जैसे मां-बाप, भाई-बहन, मित्र आदि के निरंतर संपर्क में रहने के कारण अंततः वह यह फैसला कर सकती है कि किसी भी स्थिति में कक्षा का बहिष्कार करना उचित नहीं है। दूसरे शब्दों में जहां तक छात्र राजनीति का संबंध है, उसकी प्रस्थिति श्रेणी (छात्राओं का एक अलग समूह) नहीं अपितु उसका उपसमूह संदर्भ समूह बन जाता है।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि संदर्भ समूह का चयन करना बहुत जटिल होता है। यही कारण है कि मर्टन ने मतदान संबंधी आचरण की चर्चा करते हुए कहा है कि मज़दूर यूनियन जैसे औपचारिक संगठन उस संघ के कुछ सदस्यों के लिए ही सशक्त संदर्भ समूह के रूप में काम करते हैं। जबकि अन्य लोगों के लिए यूनियन में उनके निकट के साथी ही संदर्भ भूमिका निभाते हैं।

इस कथन की सच्चाई को व्यक्ति अपने जीवन में ही अनुभव कर सकता है। प्रेम विवाह के बारे में उसके अपने परिवार में अलग-अलग राय हो सकती है। माता-पिता संभवतः इसके विरूद्ध होंगे, बड़े भाई इसके पक्ष में भी हो सकते हैं और विपक्ष में भी। उसकी बहन इसके पक्ष में हो सकती है। ऐसी स्थिति में इस बात की अधिक संभावना है कि वह अपने परिवार पर निर्भर रहने की बजाय उस राय का समर्थन करना चाहेगा जो उसकी अपनी पीढ़ी यानी उस जैसे युवा लड़कों और लड़कियों की हैं। यह स्थिति **पीढ़ीगत अंतर** (generation gap) का परिणाम है।

अगली चर्चा शुरू करने से पहले बोध प्रश्न ३ को पूरा करें ताकि अभी तक की गई आपकी प्रगति की जाँच हो जाए।

**बोध प्रश्न 3**

i) ग़ैर-सदस्यता संदर्भ समूह के चयन के पीछे कौन-से कारक हैं? अपना उत्तर चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) क्या यह सत्य है कि "प्रस्थिति-श्रेणी" सदैव संदर्भ समूह के रूप में काम करती है? कारणों को स्पष्ट कीजिए। अपना उत्तर लगभग चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

## 30.4 संदर्भ समूहों के संरचनात्मक तत्व

संदर्भ समूहों के संरचनात्मक तत्वों की जानकारी के बगैर इस विषय का ज्ञान अधूरा है। संदर्भ समूहों के बारे में इस जानकारी के बिना आपको मर्टन के इस क्षेत्र में योगदान का आभास नहीं होगा। उदाहरण के लिए, रॉबर्ट मर्टन का प्रश्न यह है कि समूह विशेष की संरचना क्या अपने सदस्यों और अधिकारियों को मूल्यों, प्रतिमानों एवं भूमिका-निर्वाहन के संबंध में पूर्ण अथवा आंशिक जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देती है। मर्टन का यह कहना है कि अपने समूह से अनुरूपता न रखने में ग़ैर-सदस्यता समूहों को संदर्भ समूह के रूप में काम करने की संभावना दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त मर्टन यह भी स्पष्ट करता है कि व्यक्ति विशेष भूमिका-पटल और प्रस्थिति-पटल के संरचनात्मक परिणामों से उत्पन्न संघर्ष की मात्रा को किस तरह कम करता है।

### 30.4.1 प्रेक्षणीयता और दृश्यमानता: प्रतिमानों, मूल्यों और भूमिका-निर्वाहन की जानकारी के अनुकृत माध्यम

यह एकदम स्पष्ट है कि अपनी स्थिति की तुलना दूसरों से करते समय व्यक्ति को उनकी स्थिति की जानकारी होना आवश्यक है जिनसे उसने अपनी तुलना की है। मर्टन का कहना है कि संदर्भ समूह आचरण के सिद्धांत में संप्रेषण के उन माध्यमों का भी अध्ययन शामिल होना चाहिए जिनसे यह जानकारी प्राप्त होती है।

इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले एक मूर्त स्थिति पर विचार कर लेना उपयोगी होगा। कल्पना कीजिए कि छात्र के रूप में व्यक्ति एक ऐसी संस्था से जुड़ा है जिसके अपने प्रतिमान एवं मूल्य हैं। स्वाभाविक है कि वह उस संस्था के प्रतिमानों और मूल्यों के अनुरूप अपने आचार-विचार बनाना चाहेगा। ऐसे में इस प्रश्न से वह नहीं बच सकता कि क्या उसके भूमिका-निर्वाहन की तुलना उस संस्था के अन्य लोगों से की जा सकती है।

अब प्रश्न यह है कि व्यक्ति को यह कैसे मालूम होता है कि समूह के अन्य सदस्य किस तरह का आचरण कर रहे हैं। वह यह कैसे जान पाता है कि दूसरों ने कौन से मूल्य तथा प्रतिमान अपनाए हैं? इन प्रतिमानों तथा वास्तविक भूमिका-निर्वाहन की पूरी जानकारी प्राप्त करना कठिन है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति के मित्र यानी संस्था के कर्मचारी हमेशा उसको यह बताने को

तैयार नहीं होंगे कि वे वास्तव में क्या कर रहे हैं और संस्था के मूल्यों तथा प्रतिमानों को कितनी गंभीरता से लेते हैं। इसलिए यह सब समूह की संरचना पर निर्भर करता है। अत: हो सकता है कि लोकतांत्रिक तथा समतावादी समूह में, जिसमें सदस्य स्वतंत्र तथा स्पष्टवादी हैं, निर्बाध संप्रेषण संभव हो और समूह की वास्तविक स्थितियों को जानना अधिक आसान हो। किंतु क्या हमेशा ऐसा होता है?

इसी प्रसंग में मर्टन एक महत्वपूर्ण बात सामने लाता है कि क्या सभी लोग एक जैसी जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते? सामान्यतया सत्ताधारी लोगों को समूह के आम सदस्यों की अपेक्षा कहीं अधिक जानकारी रहती है। इसीलिए मर्टन का कहना है कि सत्ता के ढांचे को कारगार ढंग से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि मूल्य और भूमिका-निर्वाहन दोनों स्पष्ट हों। संस्था के मुखिया तथा अन्य अधिकारियों को उन प्रक्रियाओं से जुड़े होने के कारण वास्तविक भूमिका-निर्वाहन के बारे में बेहतर जानकारी होती है।

किंतु मर्टन की मान्यता है कि प्रेक्षणीयता और दृश्यमानता की इस मात्रा की भी सीमा होती है क्योंकि "गोपनीयता की आवश्यकता"बनी रहती है और यदि अधिकारीगण भूमिका-निर्वाहन के संबंध में जानकारी रखने के मामले में सीमा से बाहर जाते हैं तो उसका विरोध होने की संभावना रहती है। इसलिए "दृश्यमानता की पर्याप्त व्यावहारिक मात्रा" की आवश्यकता है। अर्थात् दूसरों के भूमिका-निर्वाहन की सूचना उतनी ही हो, जितनी काम चलाने के लिए पर्याप्त है।

इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि किसी समूह के मूल्यों एवं प्रतिमानों तथा उसके सदस्यों के भूमिका-निर्वाहन के संबंध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कितना कठिन है। प्रेक्षणीयता और दृश्यमानता संभव न होने के कारण व्यक्ति के मन में सदस्यता समूह के मूल्यों एवं प्रतिमानों के प्रति शंका एवं अनिश्चितता उत्पन्न हो सकती है। संभवत: यह भी विश्वास होने लगता है कि आदर्श एवं यथार्थ में अंतर है। किंतु जब व्यक्ति ग़ैर-सदस्यता समूह की ओर ध्यान देता है तो अपने सदस्यता समूह के प्रति रहने वाली शंका अथवा भ्रम का अस्तित्व नहीं रह जाता। इसे यों भी समझा जा सकता है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं। सामान्यतया बाहरी लोगों के मन में ग़ैर-सदस्यता समूहों की अवास्तविक छवि बैठ जाती है।

आइए एक सीधा-सा उदाहरण लें। ग़ैर-सदस्य के रूप में अनेक भारतीयों का विश्वास है कि अमरीकी लोगों ने अपनी सभी समस्याएं हल कर ली हैं। वहां अभाव अथवा भ्रष्टाचार नहीं है और सभी सुखी हैं। किंतु यह पूरी तरह सच नहीं है। अमरीकियों को निकट से देखने पर पता चलता है कि उनकी भी अपनी अनेक समस्याएं हैं। वहां अपराध तथा तलाक़ की दर निरंतर बढ़ रही है और यह समस्या जटिल होती जा रही है।

### 30.4.2 अनुरूपता का अभाव: संदर्भ समूह आचरण का एक प्रकार

संदर्भ समूह के अध्ययन से संरचना के एक और पहलू की जानकारी मिलती है। वह है, अनुरूपता के अभाव (non-conformity) का प्रभाव।

पहले आपको यह समझना होगा कि अनुरूपता का अभाव है क्या। अपने समूह के प्रतिमानों के प्रति अनुरूपता न होना बाहय समूह के प्रति अनुरूपता के समान है। किंतु मर्टन की मान्यता है कि अनुरूपता न होने की तुलना विचलन से नहीं की जानी चाहिए। इन दोनों में कई भिन्नताएं हैं।

पहला अंतर यह है कि अपराधियों से एकदम भिन्न, अनुरूपता न रखने वाले व्यक्ति अपनी असहमति को प्रकट करते हैं। दूसरा अंतर यह है कि वे अवसरवादी नहीं होते। वे प्रतिमानों तथा अपेक्षाओं की वैधता को चुनौती देते हुए उन्हें अस्वीकार कर देते हैं। परंतु अपराधी व्यक्ति मूल्यों की वैधता को अस्वीकार करने का साहस नहीं कर पाते। अनुरूपता न रखने वाले यह नहीं मानते

कि चोरी अथवा हत्या करना अच्छी बात है। उन्हें तो बस उन नियमों को तोड़ना या उनकी अवहेलना करना आवश्यक लगता है जिनका वे विरोध करते हैं और उनके मन में समूह के प्रतिमानों को बदलने की इच्छा होती है। इसके विपरीत, अपराधी के पास नैतिकता की ऐसी अंतर्दृष्टि नहीं होती।

ग़ैर-सदस्यता संदर्भ समूहों के संदर्भ में अनुरूपता न रखने वालों के अनुभव का संरचनात्मक प्रभाव सदस्यता समूहों पर भी पड़ने की संभावना रहती है क्योंकि जैसा कि मर्टन ने कहा है कि अनुरूपता न रखने वालों को "शक्तिशाली" माना जाता है। उन्हें साहसी और बड़े जोखिम उठाने में समर्थ समझा जाता है।

वास्तव में, अनुरूपता न रखने वाले व्यक्ति जब कुछ सम्मान अर्जित करने लगते हैं तो इसका अर्थ है कि सदस्यता समूह में अपने तथा अपने मूल्यों और प्रतिमानों के प्रति अनिश्चितता उभरने लगती है। ग़ैर-सदस्यता समूह के प्रति अनुरूपता एक प्रकार से सदस्यता समूह में द्वंद्व तथा तनाव की शुरूआत करती है। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि ग़ैर-सदस्यता संदर्भ के प्रति अनुरूपता के साथ अनुरूपता न रखने वाले अपने सदस्यता समूह के भीतर परिवर्तन और संघर्ष की संभावना का रास्ता खोल देते हैं।

### 30.4.3 भूमिका पटल, प्रस्थिति-पटल और प्रस्थिति-क्रम

संदर्भ समूह के आचरण का अध्ययन करने के लिए भूमिका-पटल, प्रस्थिति-पटल तथा प्रस्थिति-क्रम की गतिकी को समझना आवश्यक है। इसे उदाहरण के माध्यम से समझने की कोशिश कीजिए। मान लीजिए, एक संदर्भ समूह के अध्यापकों से कोई व्यक्ति प्रभावित होती है और वह अध्यापक बनने की कामना करने लगती है। ऐसा होने पर उसे निश्चय ही यह समझना चाहिए कि एक अध्यापक की स्थिति क्या होती है, किस प्रकार के लोगों के साथ उसका सक्रिय संपर्क रहता है, और अपनी जिम्मेदारियां निभाने में उसे किस तरह से कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इसी संदर्भ में मर्टन ने भमिका-पटलों का उल्लेख किया है। मर्टन का कहना है कि एक विशिष्ट सामाजिक प्रस्थिति किसी एक सहयोगी भूमिका से नहीं अपितु अनेक सहयोगी भूमिकाओं से बनती है। इसी को भूमिका-पटल कहा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी अध्यापक की प्रस्थिति में केवल विद्यार्थियों के प्रति अध्यापक की भूमिका का ही नहीं, बल्कि अन्य अध्यापकों, अधिकारियों तथा विद्यार्थियों के माता-पिता आदि के प्रति उसकी भूमिकाओं का भी समावेश रहता है।

भूमिका-पटल को समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पता चलता है कि भूमिका-पटल में सभी को संतुष्ट करना कितना मुश्किल है। इसी सिलसिले में मर्टन ने भूमिका-पटल में अस्थिरता के संरचनात्मक स्रोतों का उल्लेख किया है। भूमिका-पटल में बाधा का मूल स्रोत यह संरचनात्मक परिस्थिति है कि एक विशेष स्थिति रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के ऐसे भूमिका-सहयोगी होते हैं जिनका समाज में अलग स्थान होता है। उदाहरण के लिए, एक अध्यापक के भूमिका-पटल में केवल उसके सहयोगी अध्यापक नही, बल्कि स्कूल बोर्ड के प्रभावशाली सदस्य भी शामिल होते हैं। स्कूल बोर्ड के सदस्य अध्यापक से जो अपेक्षाएं रखते हैं, आवश्यक नहीं है कि ये अपेक्षाएं उसके सहयोगी अध्यापकों की अपेक्षाओं जैसी ही हों और इसी से संघर्ष की उत्पत्ति होती है।

परंतु मर्टन का कथन है कि इस संघर्ष की मात्रा को कम किया जा सकता है। पहली बात तो यह है कि विशिष्ट सामाजिक प्रस्थिति वाले व्यक्ति के आचरण से सभी भूमिका-सहयोगियों का एक जैसा संबंध नहीं होता। इसलिए विशिष्ट सामाजिक प्रस्थिति वाले व्यक्ति को उन लोगों की अपेक्षाओं के प्रति चिंतित नहीं होना चाहिए जो उससे सीधे जुड़े हुए नहीं हैं।

दूसरी बात यह है कि विशिष्ट प्रस्थिति वाले व्यक्ति को अपने भूमिका-पटल के सभी लोगों से सक्रिय संपर्क नहीं करना होता। उदाहरण के लिए, कक्षा में पढ़ाते हुए अध्यापक का संबंध केवल

विद्यार्थियों से होता है, भूमिका-पटल के अन्य सदस्यों से नहीं। मर्टन की दलील है कि प्रेक्षणीयता से इस प्रकार की मुक्ति अध्यापक को उस द्वंद्व से बचाने में सहायक होती है जो भूमिका सहयोगियों की भिन्न-भिन्न अपेक्षाओं से उभर सकती है।

तीसरी बात यह है कि विशिष्ट सामाजिक स्थिति वाले व्यक्ति के समान और भी अनेक व्यक्ति होते हैं। मर्टन का कहना है कि उसके व्यावसायिक सहयोगी सत्ता के ढांचे तथा उस प्रस्थिति के भूमिका-पटल सहयोगियों की परस्पर विरोधी अपेक्षाओं से उत्पन्न समस्याओं से निपटने के लिए संरचनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

भूमिका-पटल के अलावा प्रस्थिति पटल की भी समस्या है जिसे संदर्भ समूह सिद्धांत के प्रसंग में समझना आवश्यक है। वास्तव में, यह प्रस्थिति पट क्या है?

एक ही व्यक्ति की अलग-अलग प्रस्थितियां - अध्यापक, पति, मां, पिता, भाई, बहन, राजनीतिक कार्यकर्ता - हो सकती हैं। सामाजिक प्रस्थितियों की इस पूरकता को उसका प्रस्थिति-पटल माना जा सकता है। प्रत्येक प्रस्थिति के अपने-अपने पृथक भूमिका-पटल हो सकते हैं।

एक प्रस्थिति की बजाय प्रस्थिति-पटल की विद्यमानता से मनुष्य के लिए मुश्किलें पैदा होती हैं। इसका कारण यह है कि उसके लिए अपनी सभी प्रस्थितियों की अपेक्षाएं सदैव पूर्ण करना असंभव होता है। उदाहरण के लिए, एक राजनेता व्यापक उद्देश्य के प्रति वचनबद्धता के कारण अपनी अन्य प्रस्थितियों जैसे पत्नी अथवा माँ की प्रस्थिति को सही ढंग से नहीं निभा पाती।

इसलिए, ऊपर दिया गया प्रश्न सामने आता है, उदाहरण के लिए, यदि राजनेता आपका संदर्भ समूह बनें तो आपको एक राज-नेता के प्रस्थिति-पटल में संभावित द्वंद्व तथा उसको हल करने के प्रयासों के बारे में अवश्य जान लेना चाहिए।

मर्टन के अनुसार, प्रस्थिति-पटल के तनाव से बचाव के अनेक उपाय हैं। पहला यह है कि अन्य लोगों द्वारा यह नहीं माना जाता कि आप एकमात्र प्रस्थितिवान व्यक्ति हैं। मर्टन का कहना है कि यहां तक कि हर व्यवसाय के मालिक को भी यह एहसास रहता है कि उसका कर्मचारी मात्र कर्मचारी नहीं है, वह पिता, पति अथवा बेटा भी है। यही कारण है कि जिस कर्मचारी के किसी निकट संबंधी की मृत्यु हो जाती है उससे कार्य की अपेक्षा सामान्य रूप की तरह नहीं की जाती।

दूसरा तथ्य यह है कि दूसरों की समस्याओं को सहानुभूति के साथ समझने के भाव की मदद से प्रस्थिति से जुड़े कर्त्तव्यों से उपजे द्वंद्व के शिकार हुए लोगों पर पड़ा दबाव कम किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को एक जैसी सदस्यता से जूझना पड़ता है और प्रत्येक व्यक्ति का प्रस्थिति-पटल होता है। यह समान नियति समानुभूति को जन्म देती है।

तीसरा तथ्य यह है कि प्रस्थिति पटल के तथ्यों का समुच्चय बिना किसी पूर्व-निर्धारण के नहीं होता। इससे भी द्वंद्व की संभावना कम हो जाती है। मर्टन के अनुसार, प्रभावशाली प्रस्थितियों के लोगों द्वारा आत्मसात् किए गए मूल्य ऐसे होते हैं कि यह संभावना बहुत कम रहती है कि उनमें मूल्यों सै मेल न खाने वाली प्रस्थितियों को अपनाने की इच्छा हो।

संदर्भ समूह के सिद्धांत की दृष्टि से यह तथ्य बहुत दिलचस्प है। एक उदारहण से यह बात स्पष्ट हो जाती है। मान लीजिए कि एक व्यक्ति का जन्म तथा पालन-पोषण एक सुसंस्कृत एवं शिक्षित परिवार में हुआ है, और इसी वातावरण के कारण वह विद्वान बन जाती है। अब ऐसी पृष्ठभूमि के साथ उसके लिए सैनिक अधिकारी बनने की इच्छा करने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि वह जानती है कि इन दोनों स्थितियों में सामंजस्य रखना कितना कठिन होगा। संभवत: वह प्रोफ़ेसर बनना चाहेगी। तब दो प्रस्थितियों, यानी एक विद्वान तथा एक प्रोफ़ेसर की प्रस्थिति, में सामंजस्य रखने में कठिनाई नहीं होगी। कहने का मतलब यह है कि संदर्भ व्यक्ति के चयन या

किसी प्रस्थिति को प्राप्त करने की इच्छा के पीछे एक उद्देश्य तथा तार्किकता विद्यमान होती है। संभवत: व्यक्ति की वही इच्छा होती है जिसकी उसके विचार तथा प्रयोजन अनुमति देते हैं। इसलिए यह आवश्यक नहीं कि प्रस्थिति-पटल में सभी प्रस्थितियों के बीच आपसी टकराव ही हो।

इकाई के सारांश को पढ़ने से पहले बोध प्रश्न 4 को पूरा कर लें।

**बोध प्रश्न 4**

i) मर्टन के अनुसार "अनुरूपता न रखने वाले व्यक्ति अपराधी नहीं हैं"। क्यों? अपना उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

क) सभी भूमिका-सहयोगियों का विशेष सामाजिक प्रस्थिति वाले लोगों के आचरण के साथ समान रूप से संबंध होता है।

ख) दूसरों की समस्याओं को समानुभूति के साथ समझने के भाव की मदद से प्रस्थिति से जुड़े कर्त्तव्यों से उत्पन्न द्वंद्व के शिकार हुए लोगों पर पड़ा दबाव काफी कम किया जा सकता है।

ग) किसी प्रस्थिति-पट के तत्वों का समुच्चय अनिवार्य रूप से बिना किसी पूर्व-निर्धारण के हो जाता है।

## 30.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको यह जानकारी मिली कि संदर्भ समूह के आचरण का अध्ययन बहुत उपयोगी है। इसके मुख्य कारण इस प्रकार हैं

i) इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि कब और क्यों अपनी स्थिति की तुलना दूसरों की स्थिति से की जाती है, और उसी के अनुरूप अपने आचरण, जीवन-शैली तथा भूमिका-निर्वाहन को ढाला जाता है।

ii) इससे यह भी पता चलता है कि कब और कैसे सदस्यता समूह तथा ग़ैर-सदस्यता समूह संदर्भ समूह के रूप में काम करते हैं।

iii) इससे संदर्भ समूह के आचरण के संरचनात्मक परिणामों तथा प्रभावों को समझने के साथ-साथ यह जानने में सहायता मिलती है कि किस प्रकार अपेक्षाकृत गतिशीलता वाली सामाजिक प्रणाली में लोग ग़ैर-सदस्यता समूहों का संदर्भ समूह के रूप में चयन करने को प्रेरित होते हैं, और इसके फलस्वरूप किस प्रकार अपने समूह के प्रति व्यक्ति की अनुरूपता न होने से उस समूह में परिवर्तन, द्वंद्व तथा प्रगति की संभावनाओं का जन्म होता है।

## 30.6 शब्दावली

**उपनिवेशवादी वर्ग** उपनिवेशवादी प्राय: यह समझते हैं कि वे सर्वगुण सम्पन्न हैं और दूसरों को सीख देने में सर्व-समर्थ हैं। सारे जगत् को सभ्य

बनाना उनका कर्त्तव्य है। इसे "गोरे व्यक्ति का बोझ" कहा जाता है।

**पीढ़ीगत अंतर (generation gap)**

समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका अर्थ है युवकों तथा वृद्ध लोगों के बीच संघर्ष। किस प्रकार उनके मूल्यों, नैतिक आदर्शों तथा विचारों में अंतर होता है।

**विश्व के प्रति दृष्टिकोण**

सामान्यतया यह माना जाता है कि प्रत्येक सामाजिक समूह, चाहे वह लिंग, जाति, वर्ग नृजातीय समूह या राष्ट्रीयता का समूह हो, विश्व को देखने का अपना एक अलग दृष्टिकोण रखता है। इसके फलस्वरूप, विश्व के प्रति दृष्टिकोण में समाज एवं विश्व से संबंधित विचार अर्थात् राजनीतिक अभिवृत्ति, धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक आदर्श शामिल हैं जिससे एक समूह से दूसरे समूह की भिन्नता झलकती है।

## 30.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मर्टन, रॉबर्ट के. 1968 सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर, फ्री प्रेस: न्यूयार्क

टर्नर, जे.एच. 1987 स्ट्रक्चर ऑफ सोशियोलॉजिकल थ्योरी, रावत पब्लिकेशन्स: जयपुर

## 30.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

i) यदि मनुष्य अपनी नियति की तुलना दूसरों से करते हैं, जो वे प्राय: करते हैं, तो इस बात की पूरी संभावना है कि कभी-कभी वे अपेक्षाकृत वंचित महसूस करें क्योंकि उन्हें दूसरे लोग अपने से अधिक सुखी, अधिक शक्तिशाली और अधिक प्रतिष्ठित लग सकते हैं। इसका उदाहरण एक भारतीय वैज्ञानिक हो सकता है, जो अमरीका में बसे एक अन्य भारतीय वैज्ञानिक की स्थिति से अपनी तुलना करने पर स्वयं को उन अनेक सुविधाओं से वंचित महसूस करने लगता है जो अनुसंधान में सहायक है।

ii) जब कोई प्राध्यापक अपनी प्रस्थिति, अधिकार या प्रतिष्ठा का मूल्यांकन करने के लिए अपनी तुलना आई.ए.एस. अधिकारियों के साथ करता है तो मर्टन के अनुसार वह ग़ैर-सदस्यता समूह का संदर्भ समूह के रूप में चयन करता है।

**बोध प्रश्न 2**

i) ग)

ii) सकारात्मक संदर्भ समूह वह होता है जिसे कोई व्यक्ति प्रशंसा के भाव से अपनाता है और उसके मूल्यों तथा प्रतिमानों को आत्मसात् कर लेता है। नकारात्मक संदर्भ समूह वह समूह होता है, जिससे व्यक्ति घृणा करता है, उसे अस्वीकार करता है, और उसके प्रतिमानों को अपनाने की बजाय अपनी अलग पहचान बनाने के लिए विपरीत प्रतिमानों की रचना कर लेता है।

**बोध प्रश्न 3**

i) जब कोई ग़ैर-सदस्यता समूह समाज की संस्थागत संरचना की दृष्टि से अधिक शक्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता प्रतीत होता है तो उसका चयन संदर्भ समूह के रूप में किया जाता है।

इसके अलावा, अपने सदस्यता समूहों से असंतुष्ट होने के कारण "अलग-थलग पड़े" लोग ग़ैर-सदस्यता समूहों का चयन संदर्भ समूह के रूप में करने को प्रेरित होत हैं।

ii) नहीं, यह सही नहीं है कि "प्रस्थिति श्रेणी" सदैव संदर्भ समूह के रूप में काम करती है। मर्टन ने कहा भी है कि प्रस्थिति श्रेणी बहुत व्यापक तथा निवैयक्तिक होने के कारण अपने सदस्यों पर सीधे प्रभाव डालने में विफल रह सकती है। इसकी बजाय निरंतर सक्रिय संपर्क वाले एक उपसमूह को संदर्भ समूह के रूप में स्वीकार किए जाने की अधिक संभावना होती है।

**बोध प्रश्न 4**

i) अनुरूपता न रखने वाला व्यक्ति अपराधी नहीं होता क्योंकि अपराधी के विपरीत अनुरूपता न रखने वाला अपनी असहमति या असंतोष को छिपाता नहीं है। अपराधी कमज़ोर तथा अवसरवादी होता है, जबकि अनुरूपता न रखने वाला इतना साहसी होता है कि वह उन मूल्यों एवं प्रतिमानों को चुनौती दे सकता है जो उसे अस्वीकार्य हैं। अपराधी के विपरीत, अनुरूपता न रखने वाला उच्च नैतिक मूल्यों का धनी होता है। वह नई मूल्य प्रणाली को जन्म देना चाहता है।

ii) ख)